



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 13 अंक 2

www.csir.res.in

फरवरी 2025

सीएसआईआर-नीस्ट द्वारा विकसित स्वचालित जैव-चिकित्सा अपशिष्ट उपचार रिग का लोकार्पण

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने हाल ही में एम्स नई दिल्ली में सीएसआईआर-नीस्ट, तिरुवनन्तपुरम द्वारा विकसित भारत का पहला स्वदेशी स्वचालित जैव-चिकित्सा अपशिष्ट उपचार संयंत्र का लोकार्पण किया। माननीय मंत्री महोदय ने एम्स



सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में "सृजनम" नामक स्वचालित जैवचिकित्सा अपशिष्ट उपचार रिग को आधिकारिक तौर पर राष्ट्र को समर्पित किया गया।

तत्पश्चात वे सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी और एम्स के निदेशक डॉ. एम. श्रीनिवास के साथ एम्स परिसर में उस स्थान पर गए जहां मशीनरी स्थापित की गई थी और औपचारिक रूप से

इसे चालू किया।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा विकसित यह अभिनव, पर्यावरण अनुकूल तकनीक, जैवचिकित्सा से संबंधित कचरे के स्थायी प्रबंधन में महत्वपूर्ण प्रगति प्रदान करती है। इसकी कमीशनिंग के अवसर पर डॉ. जितेंद्र सिंह ने 'अपशिष्ट से धन' की ओर आदर्श बदलाव का आह्वान किया और संधारणीयता एवं

पर्यावरणीय चिंताओं के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पांच नाजुक अर्थव्यवस्थाओं से निकलकर विश्व की पहली पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गई है और निरंतर विकास के लिए तैयार है। उन्होंने नए जैवचिकित्सा अपशिष्ट उपचार रिग के महत्व पर बल दिया, जो स्वास्थ्य सुविधाओं में अपशिष्ट प्रबंधन में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए तैयार है।



"सृजनम" रिग महंगे और ऊर्जा-गहन भस्मक के उपयोग के बिना, रक्त, मूत्र, थूक और प्रयोगशाला डिस्पोजेबल जैसे रोगजनक जैवचिकित्सा कचरे को कीटाणुरहित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, यह रिग दुर्गंधयुक्त जहरीले कचरे को सुगंध प्रदान करता है। यह उपकरण 400 किलोग्राम की दैनिक क्षमता के साथ, प्रारंभिक चरण में प्रति दिन 10 किलोग्राम डिग्रेडेबल चिकित्सा कचरे को संभालने में सक्षम है।

बेहतर अपशिष्ट निपटान समाधानों की बढ़ती मांग के साथ सृजनम रिग सुरक्षित और अधिक कुशल दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो हानिकारक कचरे के मानव जोखिम से जुड़े खतरों को समाप्त करता है और इसके इधर-उधर फैलने तथा दुर्घटनाओं की आशंका को कम करता है। प्रौद्योगिकी को इसकी रोगाणुरोधी कार्रवाई के लिए तीसरे पक्ष द्वारा मान्य किया गया है, और अध्ययनों से पता चला है कि उपचारित सामग्री वर्मीकम्पोस्ट जैसे जैविक उर्वरकों की तुलना में अधिक सुरक्षित है। डॉ. सिंह ने पर्यावरण-अनुकूल तरीके से रोगजनक जैव चिकित्सा अपशिष्ट के निपटान



के लिए अभिनव और लागत प्रभावी समाधान के लिए सीएसआईआर-नीस्ट की सराहना की। उन्होंने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की 2023 की वार्षिक रिपोर्ट का हवाला दिया, जिसमें यह उल्लेख किया गया था कि भारत प्रतिदिन 743 टन जैवचिकित्सा कचरा उत्पन्न करता है, जो इसके सुरक्षित और उचित निपटान में महत्वपूर्ण चुनौती पेश करता है। यह नई तकनीक इस मुद्दे का समाधान करती है और पारंपरिक भस्मीकरण विधियों के लिए पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार विकल्प प्रस्तुत करती है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि अनुचित पृथक्करण, खुले में डंपिंग, खुले में अपशिष्ट सामग्रियों को जलाना और जैवचिकित्सा

कचरे के अपर्याप्त दहन से कार्सिनोजेन्स और पार्टिकुलेट मैटर निकलने सहित गंभीर स्वास्थ्य खतरे पैदा होते हैं। उन्होंने संक्रामक रोगों के प्रसार को रोकने और रोगाणुरोधी प्रतिरोध के जोखिम को कम करने के लिए प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों का उल्लेख किया,

जिनके नेतृत्व में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और हरित पहल में भारत की प्रगति जारी है। उन्होंने इस परियोजना के लिए आवश्यक मंजूरी

हासिल करने में त्वरित कार्रवाई के लिए पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) के सचिव श्री तन्मय कुमार की प्रशंसा की।

डॉ. सिंह ने भारत द्वारा हासिल की गई अन्य तकनीकी उपलब्धियों का उल्लेख किया, जिसमें पहली स्वदेशी डीएनए वैक्सीन, सर्वाइकल कैंसर से निपटने के लिए भारत की पहली एचपीवी वैक्सीन का विकास और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में तेजी से हो रही प्रगति शामिल है। उन्होंने स्वदेशी एंटीबायोटिक 'नेफिथ्रोमाइसिन' के निर्माण और जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) द्वारा समर्थित हीमोफिलिया के लिए भारत के पहले जीन थेरेपी परीक्षण



के साथ फार्मास्यूटिकल्स में भारत की सफलता की भी जानकारी दी। सीएसआईआर के उपाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र सिंह ने 'वन वीक वन लैब' पहल को भी याद किया, जिसका उद्देश्य एनसीएल पुणे द्वारा विकसित पहली हाइड्रोजन बसें, सीएसआईआर पालमपुर द्वारा विकसित ऑफ-सीजन ट्यूलिप, 108 पंखुड़ियों वाला कमल जैसी सीएसआईआर की अभूतपूर्व परियोजनाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने पहले 100 दिनों के दौरान सरकार की प्राथमिकताओं पर भी बल दिया, जिसमें भारत की पहली बायो ई 3 नीति की मंजूरी, अंतरिक्ष स्टार्टअप के लिए व्यवहार्यता गैप फंडिंग के लिए 1000 करोड़ की

मंजूरी, मिशन मौसम के लिए 2000 करोड़ और अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ) के लिए 50,000 करोड़ की मंजूरी शामिल है। इसके अलावा, उन्होंने हालिया केंद्रीय बजट पर भी बात की, जिसमें भारत लघु मॉड्यूलर रिएक्टरों (एसएमआर) के लिए 20,000 करोड़ का प्रस्ताव है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने संस्थानों के बीच अकादमिक सहयोग बढ़ाने का आग्रह करते हुए और स्नातकोत्तर छात्रों को विनिमय कार्यक्रमों में सह-मार्गदर्शक बनाने, तालमेल और साझा शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के लिए सरकार के अटूट समर्थन पर बल दिया। उन्होंने कहा, "यह पहल 2047 तक सरकार के 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण के अनुरूप है, और नवाचार एवं संधारणीय प्रौद्योगिकियों में निरंतर प्रगति के साथ, भारत पर्यावरण और स्वास्थ्य देखभाल समाधानों में ग्लोबल लीडर बनने के लिए तैयार है।"

इस समारोह में नीति आयोग के सदस्य डॉ. वी.के. पॉल, डीएचआर सचिव और आईसीएमआर महानिदेशक डॉ. राजीव बहल, तन्मय कुमार आईएएस, एमओईएफसीसी के सचिव, डॉ. एन. कलैसेल्वी, डीएसआईआर के सचिव और सीएसआईआर महानिदेशक तथा एम्स निदेशक डॉ. एम. श्रीनिवास सहित प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

सीएसआईआर-सीडीआरआई द्वारा औषधि अनुसंधान में वर्तमान रुझान विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन



सीएसआईआर-केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने हाल ही में औषधि अनुसंधान में वर्तमान रुझानों की 9वीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीडीआरआई, लखनऊ की निदेशक डॉ. राधा रंगराजन ने इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने इस बहुत ही महत्वपूर्ण औषधि खोज सम्मेलन के बारे में विस्तार से जानकारी दी और प्रतिभागियों को बताया कि वे किस प्रकार इस अवसर का उपयोग सीखने, नेटवर्किंग और अपने शोध कौशल को उन्नत बनाने के लिए कर सकते हैं। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर और सचिव डीएसआईआर ने श्रोताओं को संबोधित किया। उन्होंने ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक मंच के रूप में इस

कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस तरह के आयोजन शोधकर्ताओं, उद्योग जगत के अग्रणी लोगों और युवाओं को सहयोग करने के साथ-साथ फार्मास्यूटिकल्स और स्वास्थ्य सेवा में नवाचार को बढ़ावा देने का एक शानदार अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि विज्ञान की कोई सीमा नहीं है और यह कार्यक्रम वैश्विक सहयोग का प्रवेश द्वार है। डॉ. कलैसेल्वी ने शोध और विकास में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के महत्व को रेखांकित किया और छात्रों को इन चर्चाओं से प्रेरणा लेने और 2047 तक भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में वैश्विक गुरु बनाने की दिशा में काम करने का आग्रह किया।

तत्पश्चात कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, डीन तथा वरिष्ठ सलाहकार, होली फैमिली अस्पताल, नई दिल्ली और आईसीएमआर के पूर्व महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव ने भी

श्रोताओं को संबोधित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि दवा खोज में भारत की ताकत रसायन विज्ञान में इसकी समृद्ध विरासत से उपजी है, जो इसे फार्मास्यूटिकल उन्नति के लिए एक वैश्विक केंद्र बनाती है। उन्होंने कहा कि भारत ने लगातार उच्च गुणवत्ता वाली, सस्ती दवाओं का उत्पादन करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है, जिससे दुनिया भर में स्वास्थ्य सेवा की पहुंच सुनिश्चित होती है। हालांकि, सक्रिय दवा सामग्री की उपलब्धता और नई दवा खोजों की आवश्यकता जैसी चुनौतियों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि क्वांटम कंप्यूटिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का समन्वय दवा खोज में क्रांति लाने, अनुसंधान में तेजी लाने और लागत कम करने के लिए तैयार है। उन्होंने उल्लेख किया कि पारस्परिक सहयोग भारत की फार्मास्यूटिकल सफलता की आधारशिला रहा है, जैसा कि टीकों को तैयार करने के दौरान देखा गया है। यह सुनिश्चित करते हुए कि नवाचार आम जनता तक पहुंचें और लागत प्रभावी स्वास्थ्य सेवा समाधानों में भारत के नेतृत्व बनाए रखने के लिये बाजार को आकार देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

इस कार्यक्रम में यूनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा, यूएसए के फ्रैंक ए. डकवर्थ एमिनेंट स्कॉलर चेयर प्रो. क्रिस्टोफर रॉबर्ट मैककर्टी ने "दर्द का पता लगाना: प्रयोगशाला से क्लिनिक तक, औषधीय रसायनज्ञ की यात्रा" विषय पर डेबेटन भाषण दिया।



अपने भाषण में, उन्होंने दर्द प्रसंस्करण में सिग्मा-1 रिसेप्टर्स की भूमिका का पता लगाया। उन्होंने आगे एक ट्रेसर अणु एफटीसी146 की खोज और विकास की यात्रा के बारे में बात की, जो सिग्मा-1 रिसेप्टर्स के लिए चयनात्मक लिगेंड के रूप में कार्य करता है। यह ट्रेसर परिधीय नसों में तंत्रिका क्षति के स्थान का पता लगा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप बेहतर दर्द प्रबंधन हो सकता है और कुछ स्थितियों में दर्द का उपचार हो सकता है। इस ट्रेसर ने चरण 1 मानव नैदानिक परीक्षण पूरा कर लिया है और यह दर्द प्रबंधन रणनीतियों में एक सफलता हो सकती है।

अगले सत्र में अमरीका के मिनेसोटा विश्वविद्यालय के प्रो. कोर्टनी सी. एल्लिच ने ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर नए तंत्रों के साथ नए रोगाणुरोधी एजेंट विकसित करने के लिए सहकारक जैवसंश्लेषण को लक्षित करने के नए तरीकों के बारे में चर्चा की। उन्होंने दो अनोखे लक्षणों के खिलाफ नए एंटी-ट्यूबरकुलर एजेंट तैयार करने के अपने प्रयासों को साझा किया, जिनके लिए कोई प्रभावी छोटे अणु नहीं हैं। उन्होंने आशाजनक

अवरोधक रसायन विज्ञान की खोज की और पूरक तकनीकों का उपयोग करके उन्हें जैवसक्रियता और दवा निपटान विशेषताओं के लिए अनुकूलित किया। उन्होंने अनुकूलन अभियान के दौरान आने वाली कठिनाइयों पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे उन्होंने क्रिया अध्ययनों के तंत्र के एकीकरण के माध्यम से उन्हें दूर किया। उन्होंने अगली पीढ़ी के रिफामाइसिन व्युत्पन्न विकसित करने के लिए अपने सबसे हालिया शोध को भी साझा किया।

सीएसआईआर-भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान (आईआईसीबी), कोलकाता के डॉ. अरिंदम तालुकदार ने रासायनिक उप-इकाइयों के बीच जटिल अंतःक्रियाओं के माध्यम से टीएलआर7 मॉड्युलेटर में एगोनिज्म-एंटागोनिज्म की कार्य शैली पर अपने शोध निष्कर्षों को साझा किया। टीएलआर7 एक एंडोसोमल टीएलआर प्रोटीन है जो शरीर को वायरस और बैक्टीरिया को पहचानने और प्रतिक्रिया करने में मदद करता है। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में यह उल्लेख किया कि एगोनिस्ट और एंटागोनिस्ट में प्रायः उनके लक्षित अणुओं में ओवरलैपिंग बाइंडिंग साइट होती है। इसलिए, एगोनिस्टिक

रासायनिक संयोजन का उपयोग एंटागोनिस्ट को अभिकल्पित करने के लिए एक टेम्पलेट के रूप में किया जा सकता है। एगोनिस्टिक प्यूरीन की शुरुआत करके, तर्कसंगत तरीके से विच्छेदन करके, उन्होंने सी-2 पर एक विलक्षण 'रासायनिक स्विच' की पहचान की जो एक शक्तिशाली प्यूरीन संयोजन टीएलआर7 एगोनिस्ट को एगोनिज्म खोने और एंटागोनिस्ट गतिविधि प्राप्त करने के लिए बना सकता है। उन्होंने अपने अध्ययन के सबसे अभूतपूर्व परिणाम का उल्लेख "रासायनिक उप-इकाइयों" के जटिल परस्पर क्रिया के रूप में किया, जो अनुक्रमिक एकल-बिंदु परिवर्तन के माध्यम से एगोनिस्ट-आंशिक एगोनिस्ट-प्रतिपक्षी-एगोनिस्ट सर्कल में प्रवेश करने के लिए है। उन्होंने आगे टीएलआर-7 मॉड्युलेटर के इन नए वर्ग को चिकित्सीय विकास के लिए आशाजनक अग्रदूत के रूप में प्रस्तावित किया।

सुप्रसिद्ध वक्ताओं ने नवीनतम एवं समृद्ध जानकारी से भरपूर अपने भाषणों से सीटीडीडीआर-2025 के प्रतिभागियों में वैज्ञानिक सोच को जाग्रत की, इससे प्रतिभागियों में अनुसंधान और विकास के लिए नई ऊर्जा और नई दिशा का संचार होगा।

सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा एक दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम) ने हाल ही में अपने जम्मू परिसर में एकदिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अनुसंधान पद्धति, विज्ञान संचार और बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) के बारे में जानकारी प्रदान करना था, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सभी क्षेत्रों के साथ-साथ प्रबंधन, विधि आदि जैसे अन्य क्षेत्रों से भी प्रतिभागी शामिल हुए। इस कार्यक्रम में छात्रों, शोधार्थियों, वैज्ञानिकों और अन्य पेशेवरों ने बढ़-चढ़ कर प्रतिभागिता की।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. जबीर अहमद, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में देश के वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र को समृद्ध बनाने के लिए अनुसंधान पद्धति, विज्ञान संचार और बौद्धिक संपदा अधिकार के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर सीएसआईआर-आईआईआईएम के समन्वयक और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कंचेरला प्रसाद ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। तत्पश्चात सीएसआईआर-आईआईआईएम के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नासिर उल रशीद ने प्रतिभागियों को कौशल विकास कार्यक्रम की थीम से परिचित कराया और कार्यक्रम की रूपरेखा, लाभ और प्रमुख परिणामों पर प्रकाश डाला।

उद्घाटन सत्र के पश्चात विज्ञान संचार और बौद्धिक संपदा अधिकार से संबंधित विषय

पर विशेषज्ञों ने चर्चा की।

पहले सत्र के दौरान, सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मनीष



मोहन गोरे ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने देश में वैज्ञानिक घटनाक्रमों के बारे में लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से भारतीय प्रयोगशालाओं के शोध परिणामों को सामने लाने में विज्ञान संचार के महत्व को रेखांकित किया।

इसके बाद, डॉ. कंचेरला प्रसाद ने विज्ञान के एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू पर अपनी बात रखी, जिससे वैज्ञानिकों को अपने शोध का लाभ मिल सके और उन्हें बौद्धिक संपदा अधिकार के बारे में प्रेरित किया जा सके। डॉ. प्रसाद ने बौद्धिक संपदा अधिकार के महत्व पर चर्चा की और विभिन्न दृष्टांतों द्वारा इसके अनुप्रयोग पर प्रकाश डाला।

अगले सत्र में, सीएसआईआर-आईपीयू, नई दिल्ली की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. लिपिका पटनायक ने आईपीआर पर चर्चा जारी रखते हुए पेटेंट दाखिल करने की प्रक्रिया और नवाचारों की सुरक्षा के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं का उल्लेख किया।

तत्पश्चात डॉ. लव शर्मा, वैज्ञानिक, आरएमबीडी एंड आईएसटी, सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू ने अपने व्याख्यान के दौरान विज्ञान संचार की मूल बातों पर चर्चा की और प्रभावी विज्ञान संचार के उद्देश्य से आवश्यक कौशल को उजागर करने के लिए कुछ लेखों के उदाहरण साझा किए, जो व्यापक प्रभाव के लिए वैज्ञानिकों के साथ-साथ आम जनता तक उचित संदेश भेज सकते हैं।

इस अवसर पर डॉ. जबीर अहमद ने वर्ष 2025 के कैलेंडर का भी अनावरण किया। यह कैलेंडर, 2024 की एक दृश्य यात्रा है, जो अनुसंधान और विकास, कौशल विकास, उद्यमिता, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सामाजिक कल्याण के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। समापन सत्र में सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू के आरएमबीडी एंड आईएसटी प्रमुख इंजीनियर अब्दुल रहीम ने प्रतिभागियों से फीडबैक लिया और प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। अंत में धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-सिंफर और एमजीएमआई द्वारा संवहनीय खनन और अन्वेषण हेतु तकनीकी प्रगति पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान और एमजीएमआई (माइनिंग, जियोलॉजिकल एंड मेटलर्जिकल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया) ने संयुक्त रूप से संवहनीय खनन और अन्वेषण हेतु तकनीकी प्रगति पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (टीएसएमई-2025)

का आयोजन किया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सिंफर के निदेशक एवं अध्यक्ष (टीएसएमई-2025), प्रो. अरविंद कुमार मिश्रा ने अपने सम्बोधन में भारत की जीडीपी और आर्थिक प्रगति में खनन उद्योग की भूमिका का उल्लेख किया और सतत भविष्य सुनिश्चित करने के लिए हरित खनन प्रथाओं और शून्य कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करने की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रो. मिश्रा ने संवहनीय खनन और अन्वेषण हेतु तकनीकी प्रगति के व्यापक महत्व पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री पी.एम. प्रसाद ने खनन के क्षेत्र में संधारणीयता सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार खनन के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि खनन क्षेत्र में अनुसंधान निधि वर्तमान में सीमित है। टाटा स्टील के उपाध्यक्ष (कच्चा माल) श्री सुंदर रामम ने टिकाऊ खनन प्रौद्योगिकियों और सुरक्षा



प्राथमिकताओं पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि साझा की। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) के निदेशक (तकनीकी) पीएंडपी, श्री मनोज कुमार अग्रवाल ने खनन में चल रही चुनौतियों, विशेष रूप से सुरक्षा उपायों और अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया। इस अवसर पर श्री सतीश झा, सीएमडी, ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल) ने खनन क्षेत्र में स्थिरता और न्यायपूर्ण बदलाव के महत्व के बारे में बात की, उन्होंने उद्योग से सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देते हुए इसके नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों को दूर करने का आग्रह किया।

सीएसआईआर-सिंफर के मुख्य वैज्ञानिक और टीएसएमई-2025 के संयोजक डॉ. एम. पी. रॉय ने बताया कि भारत के विकास और संधारणीयता में खनन की भूमिका पर चर्चा करने के लिए 36 उद्योगों के 250 से

अधिक प्रतिभागी एकत्र हुए। उद्घाटन सत्र का समापन टीएसएमई-2025 स्मारिका के अनावरण और डॉ. कृपामय सरकार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ जो उद्घाटन सत्र के सफल समापन का प्रतीक है। संवहनीय खनन और अन्वेषण हेतु तकनीकी प्रगति पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (टीएसएमई-2025) का समापन समारोह सीएसआईआर-सिंफर, धनबाद में संपन्न हुआ। 31 जनवरी से 1 फरवरी 2025 तक आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में विशेषज्ञों, उद्योग जगत के नेताओं और शोधकर्ताओं ने सतत खनन के भविष्य पर गहन चर्चा की। सत्र का समापन सीएसआईआर-सिंफर के मुख्य वैज्ञानिक और (टीएसएमई-2025) के संयोजक डॉ. एम. पी. रॉय द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। उन्होंने टीएसएमई-2025 को एक सफल और समृद्ध संगोष्ठी बनाने के लिए सभी प्रतिष्ठित वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा ट्यूलिप फेस्टिवल एवं साज-सज्जा वाले कंद फूलों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन



सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी), पालमपुर द्वारा दो दिवसीय ट्यूलिप फेस्टिवल एवं साज-सज्जा वाले कंद फूलों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का आयोजन सीएसआईआर-आईएचबीटी और इंडियन सोसाइटी ऑफ ओनोमेटल हॉर्टिकल्चर (आईएसओएच) के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इसका संगोष्ठी उद्देश्य सजावटी कंद फूलों की कृषि को बढ़ावा देना तथा किसानों की आमदनी को बढ़ाना था। इस अवसर पर सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अतिथियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए अपने संबोधन में आजीविका और

अर्थव्यवस्था को आकार देने में पुष्पविज्ञान की भूमिका और संस्थान के योगदान को उजागर किया। उन्होंने सीएसआईआर फ्लोरिकल्चर मिशन जो कि पुष्प फसलों के माध्यम से जैव-आर्थिक वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रचार, सुधार, मूल्य संवर्धन और जागरूकता का काम करता है, के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएं दीं और आशा व्यक्त की कि यह संगोष्ठी सभी के लिए लाभप्रद होगी।

तत्पश्चात कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित आईएसओएच के उपाध्यक्ष डॉ. वाई. सी. गुप्ता ने इस क्षेत्र में हो रहे नवीन कार्यों पर प्रकाश डाला और पुष्पविज्ञान के क्षेत्र में भावी संभावनाओं, चुनौतियों तथा इसके व्यापक दायरे पर चर्चा की। आईएसओएच के सचिव डॉ. एस. एस. सिंधु ने

संगोष्ठी के बारे में संक्षेप में बताया और पुष्पविज्ञान को बढ़ावा देने में आईएसओएच की भूमिका को स्पष्ट किया। इस अवसर पर आईएसओएच द्वारा उन व्यक्तियों को फेलोशिप और पुरस्कार प्रदान किए गए जिन्होंने पुष्पविज्ञान के क्षेत्र में उत्तम योगदान दिया है।

इस अवसर पर किसान मेला भी आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न अवसरों, उत्पाद और नवीन कृषि पद्धतियों का प्रदर्शन किया गया।

संगोष्ठी में देश भर से 250 से अधिक प्रतिभागी, 15 उद्योगों के प्रतिनिधि और 50 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

सीएसआईआर-आईएचबीटी के वैज्ञानिक डॉ. भव्य भार्गव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा एसटीईएम में बालिकाओं के सशक्तिकरण विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

सीएसआईआर- राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) ने विज्ञान में महिला और बालिका अंतर्राष्ट्रीय दिवस की पहली दशकीय वर्षगांठ पर एक दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

इस कार्यशाला का मुख्य विषय "एसटीईएम में भागीदारी के लिए बालिकाओं का सशक्तिकरण : समावेशी शिक्षा के लिए जागरूकता" था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बालिकाओं को विज्ञान, प्रौद्योगिकी,

इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) में करियर बनाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करना था। यूनेस्को की थीम "अनपैकिंग एसटीईएम करियर: हिज वॉयस इन साइंस" को केंद्र में रखते हुए यह कार्यशाला सीएसआईआर-निस्पर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला में दिल्ली विश्वविद्यालय के चार प्रतिष्ठित महिला महाविद्यालयों, गार्गी कॉलेज, कालिंदी कॉलेज, लेडी इरविन कॉलेज, देशबंधु कॉलेज और मिरांडा हाउस की 56 स्नातक छात्राएं, प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं के साथ एकत्रित हुईं। इसने एसटीईएम में महिलाओं के लिए उपलब्ध

सरकारी पहलों, छात्रवृत्तियों और वित्तपोषण के अवसरों में मार्गदर्शन, संसाधनों और बहुमूल्य अंतर्दृष्टि के लिए एक एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-निस्पर की

पहलों पर एक व्यावहारिक व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जामिया मिलिया इस्लामिया के इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संकाय की डीन और एनआईटी त्रिची की पूर्व निदेशक प्रोफेसर मिनी थॉमस ने

अपना मुख्य भाषण दिया।

इस कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला की मुख्य वैज्ञानिक डॉ. मोनिका कुलश्रेष्ठ ने भाग लिया। उन्होंने अपने सम्बोधन में आजीवन सीखने और पेशेवर विकास के लिए प्रयास करते हुए

अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के महत्व पर बल दिया। इसके बाद सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अंबिका बहल ने "राजमार्ग अभियांत्रिकी क्षेत्र: एक पुरुषों की दुनिया" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रयोगशाला अनुसंधान से लेकर फील्डवर्क तक की अपनी यात्रा साझा की तथा लिंग पूर्वाग्रहों और सामाजिक अपेक्षाओं की जटिल संरचनाओं को स्पष्ट किया। उन्होंने महिलाओं को अपने आरामदायक क्षेत्र से बाहर निकलने, अपनी शक्ति को पहचानने और आत्मविश्वास के साथ पेशेवर चुनौतियों का सामना करने की आवश्यकता पर बल दिया।



निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने स्वागत भाषण में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लैंगिक समानता के महत्व और महिलाओं के लिए वैज्ञानिक करियर में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सक्षम वातावरण बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने अकादमिक क्षेत्र से पेशेवर भूमिकाओं में निरंतर हो रहे बदलाव के सापेक्ष महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला तथा लैंगिक संवेदनशीलता और रुढ़िवादिता को तोड़ने के महत्व को रेखांकित किया। तत्पश्चात डॉ. गीता वाणी रायसम, प्रमुख, सीएसआईआर-मानव संसाधन विकास समूह ने विज्ञान में महिलाओं को समर्थन देने के लिए सीएसआईआर की विभिन्न विशेष

सीएसआईआर-निस्पर की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और भारतीय महिला वैज्ञानिक संघ (आईडब्ल्यूएसए) की दिल्ली शाखा की संयोजक डॉ. कनिका मलिक ने आईडब्ल्यूएसए से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की। सीएसआईआर-निस्पर की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक श्रीमती संध्या वाकडीकर ने

“एसटीईएम में स्नातक लड़कियों के लिए अवसर” पर एक व्याख्यान दिया और एसटीईएम करियर में महिलाओं के समर्थन के लिए सरकारी योजनाओं, वित्त पोषण के अवसरों और उपलब्ध संसाधनों पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान की।

कार्यशाला का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसके बाद राष्ट्रगान हुआ।

सीएसआईआर-निस्पर ने एसटीईएम में लैंगिक अंतर को पाटने और भावी पीढ़ियों के लिए एक समावेशी वैज्ञानिक समुदाय को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। यह पहल एसटीईएम में युवा महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सीएसआईआर-सीरी में विश्व हिंदी दिवस 2025 का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी में विश्व हिंदी दिवस समारोह गरिमामयी ढंग से आयोजित किया गया। मुख्य समारोह 13

जनवरी, 2025 को आयोजित किया गया। डॉ. राघव प्रकाश, निदेशक, परिष्कार ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, जयपुर समारोह के मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. पी. सी. पंचारिया ने की। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों,

तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्मिकों के अलावा परिष्कार कॉलेज की प्रधानाचार्या डॉ. सविता पाईवाल एवं विज्ञान संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि डॉ. राघव प्रकाश ने अपने संबोधन में हिंदी के वैश्विक प्रभाव और

मातृभाषा में शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया। मातृभाषा में तकनीकी शिक्षण को देश के समग्र विकास का प्राण तत्व बताते हुए डॉ. प्रकाश ने हिंदी को उपभोक्ता की भाषा से

हमारी संस्कृति की वाहक हैं। वर्तमान समय को देश के सांस्कृतिक पुनरुत्थान का समय बताते हुए डॉ. राघव प्रकाश ने जोर देकर कहा कि किसी भी देश के चहुँमुखी विकास के लिए

आर्थिक एवं सांस्कृतिक दोनों पक्ष मजबूत होने चाहिए।

इस अवसर पर उन्होंने श्रोताओं को विश्व हिंदी दिवस मनाए जाने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से भी अवगत कराया।

इससे पूर्व अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. पी. सी. पंचारिया ने डॉ. राघव प्रकाश, श्रीमती सविता पाईवाल एवं परिष्कार कॉलेज की आगंतुक टीम का औपचारिक स्वागत किया। उन्होंने सभी सहकर्मियों को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दीं।





डॉ. पंचारिया ने संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि संस्थान में वैज्ञानिकों सहित सभी प्रशासनिक एवं तकनीकी कार्मिक अपने कार्यालयी कार्यों एवं बातचीत में हिंदी का उपयोग करते हैं।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि ने संस्थान की वार्षिक विज्ञान पत्रिका 'इलेक्ट्रॉनिक दर्पण' के नवीनतम अंक (वर्ष 2024, अंक 8) का विमोचन किया।

इस अवसर पर पत्रिका के विज्ञान लेखकों को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित भी किया गया।

डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने मुख्य अतिथि डॉ. राघव प्रकाश को संस्थान की ओर से शॉल एवं स्मृति चिह्न तथा डॉ. सविता पाईवाल को

शॉल भेंट कर सम्मानित किया। इससे पूर्व कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने सभी कार्मिकों को मुख्य अतिथि का औपचारिक परिचय दिया। उन्होंने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गतिविधि का उल्लेख भी किया।

विश्व हिंदी दिवस के सुअवसर पर 10 जनवरी, 2025 को संस्थान में हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य वैज्ञानिक डॉ सुचंदन पाल ने किया।

इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अन्य सहकर्मी उपस्थित थे। संस्थान के ज्ञान संसाधन केंद्र (पुस्तकालय) में लगाई गई प्रदर्शनी में साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित लगभग 1000 हिंदी पुस्तकों का

प्रदर्शन किया गया। संस्थान के नियमित सहकर्मियों के साथ-साथ परियोजना सहायक, प्रशिक्षार्थी आदि भी प्रदर्शनी से लाभान्वित हुए। मुख्य अतिथि डॉ. राघव प्रकाश सहित डॉ. सविता पाईवाल, प्रधानाचार्या, परिष्कार कॉलेज ऑफ ग्लोबल एक्सिलेंस ने कॉलेज के संकाय सदस्यों एवं छात्र-छात्राओं के साथ संस्थान की विभिन्न शोध सुविधाओं/प्रयोगशालाओं, इलेक्ट्रॉनिक विज्ञान दीर्घा आदि का भ्रमण किया।

अंत में डॉ सुचंदन पाल, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए उन्होंने मुख्य अतिथि एवं निदेशक सहित सभी के प्रति आभार व्यक्त किया और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी को धन्यवाद दिया।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला ने अपनी प्लैटिनम जयंती मनाई

सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनसीएल), पुणे ने हाल ही में अपने गौरवशाली अग्रणी अनुसंधान और नवाचार की यात्रा के 75 वर्ष पूरे किए। सीएसआईआर-एनसीएल ने अपनी प्लैटिनम जयंती के सुअवसर पर 20 फरवरी 2025 अपने परिसर में विविध गतिविधियों से युक्त के एक कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पद्म भूषण डॉ. किरण मजूमदार-शॉ, बायोकॉन समूह की अध्यक्ष तथा सम्मानीय अतिथि के रूप में पद्म विभूषण डॉ. रघुनाथ माशेलकर, पूर्व महा निदेशक, सीएसआईआर ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस उत्सव ने प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और उद्योग जगत के नेतृत्वकर्ताओं ने एक साथ लाकर सीएसआईआर-एनसीएल की यात्रा और वैज्ञानिक प्रगति में इसके योगदान पर विचार-विमर्श किया। इस समारोह की शुरुवात “इंटरफेस”, एक इमर्सिव 3 डी-प्रिंटेड दीवार पर बनी मूर्ति के उदघाटन से हुई, जो विज्ञान, अभियांत्रिकी और कला की भाषा को एक प्रभावशाली दृश्य कथा में बदल देती है, जो राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला में अनुसंधान की रूपरेखा प्रस्तुत करती है।



इसके बाद मुख्य कार्यक्रम आरम्भ हुआ जिसमें 2024 में प्रयोगशाला की उपलब्धियों पर निदेशक की रिपोर्ट और मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि दोनों के व्यावहारिक भाषण शामिल थे।

इस अवसर पर डॉ. आशीष लेले, निदेशक, सीएसआईआर-एनसीएल की 2021-30 दशक के लिए विज्ञान, नवाचार और प्रौद्योगिकी रोडमैप पर प्रकाश डाला और प्रयोगशाला के प्रत्येक चिन्हित विषय से जुड़ी प्रमुख उपलब्धियों के बारे में उल्लेख किया। उन्होंने निकट भविष्य में प्रयोगशाला के लिए चुनौतियों और अवसरों का भी उल्लेख किया तथा आवश्यक हस्तक्षेप से संबंधित सुझाव दिए।

डॉ. किरण मजूमदार-शॉ ने अपने भाषण में 1989 में सीएसआईआर-एनसीएल की अपनी पहली यात्रा को याद करते हुए इसके नवाचार के लंबे इतिहास की सराहना की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अब भारत के लिए नई दवाईयाँ और उन्नत तकनीक विकसित करने का समय आ गया है। उन्होंने कहा कि कम लागत पर नवाचार करने की हमारी क्षमता के साथ, हम अपने नवाचारों को और बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उनका मानना है कि भारत वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकता है। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसी नई तकनीकों द्वारा



लाई गई रोमांचक संभावनाओं के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. शॉ ने यह उल्लेख किया कि किस प्रकार एआई पहले से ही जैवविज्ञान में सफलता हासिल कर रहा है और वैज्ञानिकों से इन बदलावों को अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हम स्वास्थ्य सेवा, जीव विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में एक स्वर्णिम युग में प्रवेश कर रहे हैं, जिसमें शोध की अनंत संभावनाएं हैं।

डॉ. मजूमदार-शॉ ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत के पास इस क्षेत्र में नेतृत्व करने के लिए प्रतिभा, महत्वाकांक्षा और संसाधन मौजूद हैं। तथापि इन संभावनाओं को वास्तविकता में बदलने के लिए नियमित निवेश, स्पष्ट सरकारी नीतियां, मजबूत शोध वातावरण और सभी हितधारकों के बीच टीमवर्क की आवश्यकता है। उन्होंने भविष्य के स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में वैज्ञानिक उन्नति और नवाचार के माध्यम से भारत की महत्वपूर्ण भूमिका की पुनः पुष्टि की।

डॉ. रघुनाथ माशेलकर ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाने में सीएसआईआर-एनसीएल के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। उन्होंने संस्थान में विकसित की जा रही कई अत्याधुनिक तकनीकों पर प्रकाश

डाला। जिनमें विभिन्न उद्योग को लाभ प्रदान करने की क्षमता है। उन्होंने पाँच मौलिक वैज्ञानिक उपलब्धियों को स्वीकारा जो सीएसआईआर-एनसीएल की देन है। उन्होंने भोपाल गैस त्रासदी और महाराष्ट्र गैस कैंकर तेज धमाका सहित प्रमुख औद्योगिक आपदाओं से निपटने में संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया तथा इसकी विशेषज्ञता और संकट प्रबंधन की क्षमता के बारे में विस्तार से बताया। इसके अलावा, उन्होंने भारत के बौद्धिक सम्पदा अधिकार (आईपीआर) आंदोलन और इसका क्षमता को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाने में सीएसआईआर-एनसीएल के नेतृत्व की सराहना की। उन्होंने सीएसआईआर-एनसीएल द्वारा जीते गए प्रतिष्ठित विश्व बैंक परामर्श अनुबंध का हवाला देते हुए कहा कि सफलता बजटीय प्रावधानों से प्रेरित नहीं होती है। बल्कि यह अभिनव विचार की शक्ति द्वारा प्रबंधित होती है। सीएसआईआर-एनसीएल के भविष्य के बारे में आत्मविश्वास जताते हुए डॉ. माशेलकर ने कहा कि इसमें ऐसे अभूतपूर्व नवाचारों को आगे बढ़ाने की क्षमता है, जो वैश्विक स्तर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के परिदृश्य को बदल सकते हैं।

इस कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण आकर्षण प्लेटिनम जुबली के विशेष प्रकाशनों का

विमोचन था, जिसमें सीएसआईआर-एनसीएल 75 कहानियां - कॉफी टेबल बुक, सीएसआईआर-एनसीएल पर फ्लोरा और फौना का तीसरा संस्करण शामिल था। तत्पश्चात परंपरा के अनुसार अनुसंधान और नवाचार में वर्ष भर विभिन्न पहलों में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले असाधारण योगदानकर्ताओं, व्यक्तियों और टीमों को एनसीएल अनुसंधान फाउंडेशन पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया।

मुख्य कार्यक्रम के बाद सीएसआईआर-एनसीएल के “अभिलेखागार और विज्ञान संग्रहालय” का उद्घाटन किया गया, जिसमें एनसीएल की समृद्ध विरासत को भौतिक और डिजिटल दोनों स्वरूपों में दर्शाई गई है। गैलरी में भारत में रसायन विज्ञान की उत्पत्ति तथा भारत की स्वतंत्रता के साथ ही सीएसआईआर-एनसीएल के जन्म का संयोग और 75 वर्षों के दौरान प्रयोगशाला की महत्वपूर्ण उपलब्धियां, वर्तमान अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास फोकस, और भविष्य की आकांक्षाओं को दर्शाया गया है। प्लेटिनम जुबली समारोह में न केवल प्रयोगशाला की उपलब्धियों का जश्न मनाया गया, बल्कि वैज्ञानिक खोज और सामाजिक प्रभाव के लिए भविष्य के प्रयासों के लिए मंच भी तैयार किया गया।

सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय स्टार्टअप महोत्सव का आयोजन

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान (आईआईआईएम) जम्मू द्वारा एक दो दिवसीय राष्ट्रीय स्टार्टअप महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें जम्मू और कश्मीर में स्टार्टअप प्रोत्साहन, नवाचार और उद्यमशीलता विकास में उल्लेखनीय सफलता की कहानियां प्रदर्शित की गईं।

इस दो दिवसीय महोत्सव का उद्घाटन 22 फरवरी, शनिवार को मुख्य अतिथि केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा विभाग तथा अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री और सीएसआईआर के उपाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में जम्मू और कश्मीर के खाद्य, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामलों के मंत्री सतीश शर्मा, भर्ती और मूल्यांकन बोर्ड (आरएबी), सीएसआईआर के अध्यक्ष पद्मश्री प्रो विनोद के. सिंह और आईआईटी कानपुर में रसायन विज्ञान के इंस्टीट्यूट चेयर प्रोफेसर, डॉ. ज़बीर अहमद, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईआईएम, डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी, निदेशक, सीएसआईआर-सिमैप, लखनऊ, डॉ. अजीत कुमार शासने, निदेशक, सीएसआईआर-एनबीआरआई, लखनऊ, डॉ. सुदेश कुमार यादव, निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर, डॉ. जतिंदर कुमार, डीबीटी-बीआईआरएसी के प्रबंध निदेशक, सीसीआरयूएम के महानिदेशक डॉ. एन. जहीर अहमद उपस्थित थे। सीएसआईआर-आईआईआईएम के निदेशक डॉ. ज़बीर अहमद



ने 45 स्टार्टअप्स उनके नवीनतम कार्यों के लिए पुरस्कार प्रदान किए।

गांधी नगर के राजकीय महिला महाविद्यालय में आयोजित इस दो दिवसीय मेगा कार्यक्रम के दूसरे दिन, जम्मू क्षेत्र के विभिन्न डिग्री कॉलेजों और स्कूलों से आए विद्यार्थियों की भारी भीड़ उमड़ी। इस कार्यक्रम ने उद्यमियों, निवेशकों, उद्योगपतियों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, जैव-इनक्यूबेटरों, विनिर्माताओं, नियामकों और नागरिक समाज के सदस्यों को महोत्सव के दौरान प्रदर्शित प्रौद्योगिकियों और नवाचारों को देखने के लिए एक मंच प्रदान किया।

एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि 800 से अधिक लोगों ने इस प्रदर्शनी का दौरा किया और कुछ स्टार्टअप्स के नवाचार आधारित विचारों तथा उनके द्वारा विकसित उत्पादों और प्रौद्योगिकियों की प्रदर्शनी देखी।

डॉ. ज़बीर अहमद सीएसआईआर-आईआईआईएम के निदेशक इस क्षेत्र में स्टार्टअप को बढ़ावा देने हेतु संस्थान के दृढ़ संकल्प का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्होंने समापन समारोह के दौरान स्टार्टअप और प्रदर्शकों को संबोधित करते हुए कहा कि प्री-क्लीनिकल ड्रग डिस्कवरी में संस्थान की विशेषज्ञता के अलावा, केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री और उपाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में, आईआईआईएम ने कृषि-उद्यमिता को भी समान रूप से बढ़ावा दिया है और स्टार्टअप को इनक्यूबेशन सहायता के लिए दो इनक्यूबेटर स्थापित किए हैं। उन्होंने कहा कि कठुआ के घटी में औद्योगिक बायोटेक पार्क में एक नया इनक्यूबेटर स्थापित करने के लिए, केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह की उपस्थिति में सीएसआईआर-

आईआईआईएम के निदेशक और बीआईआरएसी के एमडी द्वारा अनुदान सहायता पत्र समझौते (जीएलए) पर भी हस्ताक्षर किए गए।

एक प्रवक्ता ने बताया कि इसमें पूरे भारत से कुल 45 स्टार्टअप्स ने भाग लिया। जम्मू जिले के विभिन्न सरकारी डिग्री कॉलेजों के छात्रों ने भी इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया।

प्रदर्शनी में भाग लेने वाले प्रमुख स्टार्टअप्स में- मेसर्स हर्बल ऑरा, मेसर्स गौरिको, मेसर्स वन वेदा,

मेसर्स हैप्पीको, मेसर्स ग्लेन बायोटेक, मेसर्स हिमालयन एसेंशियल ऑयल्स प्रोड्यूसर

कंपनी लिमिटेड, मेसर्स जेके अरोमा लिमिटेड, समस्त इको अल्टरनेटिव्स प्राइवेट लिमिटेड, मेसर्स एसआरएनएस पीओसी प्राइवेट



लिमिटेड, मेसर्स चेनाब वैली जैतून टेली लिमिटेड, मेसर्स कात्यानी मेटल वर्क्स और

मेघालय से डॉ. हाइगिना के नेतृत्व में किसान शामिल थे। जम्मू जिला स्कूल के युवा इनोवेटर्स ने भी स्टॉल लगाए। यह कार्यक्रम

सीएसआईआर- आईआईआईएम के निदेशक डॉ. ज़बीर अहमद की देखरेख में आयोजित किया गया जिसमें विभागाध्यक्षों व वैज्ञानिकों की टीम के अलावा इंजीनियर भी शामिल थे। इनमें अब्दुल रहीम, डॉ. आशा चौबे, डॉ. धीरज व्यास, डॉ. शशांक सिंह, डॉ. सुमित गांधी, डॉ. नवीद काजी, डॉ. सुफला गुप्ता, डॉ. सौरभ सरन, डॉ. राज किशोर, विक्रम सिंह, सीनियर सीओए, अजय कुमार, सीओएफए,

दिलीप गहलोत, एसपीओ और राजेश गुप्ता, एओ प्रमुख थे।

सीएसआईआर-आईआईटीआर द्वारा हीरक जयंती समारोह का आयोजन

सीएसआईआर-भारतीय विष विज्ञान अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-आईआईटीआर) में अनुसंधान और नवाचार में उत्कृष्टता के 60 वर्षों की स्मृति में चल रहे हीरक जयंती समारोह के हिस्से के रूप में संस्थान ने 4 फरवरी, 2025 को प्रतिष्ठित आईआईटीआर हीरक जयंती भाषण संबोधन (आईडिया) श्रृंखला के व्याख्यान का आयोजन किया।

डॉ. आर. पार्थसारथी ने इस सत्र के प्रमुख वक्ता, पद्मश्री डॉ. राम चेत चौधरी, जो कि सहभागी ग्रामीण विकास फाउंडेशन (पीआरडीएफ), गोरखपुर के अध्यक्ष हैं, का परिचय कराया। डॉ. चौधरी, जिन्होंने प्रभावशाली अनुसंधान और ग्रामीण विकास के लिए दशकों तक

काम किया है, ने " 50 मिनट में 50 वर्ष का अनुभव " शीर्षक से एक सम्मोहक और विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया। उनके संबोधन



ने विज्ञान, नवाचार और समुदाय-संचालित पहलों में उनके शानदार पांच दशक लंबे सफर पर एक आकर्षक पूर्वव्यापी जानकारी प्रदान की, जिसमें अनुसंधान के विकास, इसके

सामाजिक प्रभाव और इस दौरान सीखे गए सबक के बारे में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सीएसआईआर-

आईआईटीआर के निदेशक डॉ. भास्कर नारायण ने की, जिन्होंने अध्यक्षीय भाषण दिया। आईडिया सीरीज सीएसआईआर-आईआईटीआर की ज्ञान-साझाकरण पहलों का आधार बनी हुई है, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में परिवर्तनकारी नवाचारों पर विचार-विमर्श करने के लिए प्रख्यात वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और विचारकों को एक साथ लाती है। इस तरह के जुड़ावों के माध्यम से, सीएसआईआर-आईआईटीआर प्रभावशाली अनुसंधान को आगे बढ़ाने के अपने मिशन की पुष्टि करता है जो सामाजिक कल्याण और राष्ट्रीय प्रगति में योगदान देता है।

राजभाषा विभाग ने सीएसआईआर-आईआईटीआर को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार प्रदान किया

गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 17 फरवरी 2025 को जयपुर में मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों के लिए संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सीएसआईआर-भारतीय विषयविज्ञान अनुसंधान संस्थान, लखनऊ को लगातार चौथी बार प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह पुरस्कार उत्तर क्षेत्र-2 (उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड) स्थित “क” क्षेत्र में केंद्रीय सरकार के कार्यालयों की श्रेणी में (50 से अधिक स्टाफ की संख्या वाले) है। श्री कृष्ण



राज सिंह, प्रशासनिक अधिकारी व श्री शुभांग मिश्रा, सीएसआईआर-भारतीय विषयविज्ञान अनुसंधान संस्थान ने श्री भजन लाल, माननीय

मुख्यमंत्री, राजस्थान एवं श्री नित्यानंद राय, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार व श्री प्रेमचन्द बैरवा उप-मुख्यमंत्री राजस्थान के कर कमलों से पुरस्कार शील्ड और प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

इस सम्मलेन में डॉ आलोक कुमार पांडेय, श्री कृष्ण राज सिंह, श्री शुभांग मिश्रा एवं श्री कलीम उद्दीन ने सीएसआईआर-आईआईटीआर की ओर से समारोह में प्रतिभागिता की।